इंद्रप्रस्थ उद्घोष

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

दिल्ली | रविवार | 10 दिसंबर, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | मार्गशीर्ष त्रयोदशी | शक संवत् 1945

अग्र लेख

जोश, जुनून और उमंग सुरक्षित हाथों में है भारत

जोश, जुनून और उमंग। परिषद के नारों पर थिरकते पांव, पंक्तियों का अनुशासन बनाए रखते हुए। बुराड़ी मैदान पर बसे इन्द्रप्रस्थ नगर से दिल्ली विश्वविद्यालय स्थित मौरिस नगर चौक तक सड़कों पर बिखरे फूल, दोनों ओर पुष्प वर्षा करते नागरिक, राष्ट्रीयता के भाव से अनुप्राणित वातावरण, कोलाहल के बीच भावनाओं का उद्रेक और आकाश के छोर पर टिकी युवा प्रतिनिधियों की सपनीली आंखें, जो क्षितिज की कोर पर स्वर्णाक्षर में लिखा भारत का भविष्य पढ़ रही हैं और अपने कर्तव्य से उसे गढ़ रही हैं।

यह परिषद के अधिवेशन की शोभायात्रा है जो मौरिस नगर चौक पहुंच कर खुले अधिवेशन का रूप ले चुकी है। यहां वातावरण दूसरा ही है। देशभक्ति के नारों से दिल्ली विश्वविद्यालय गूंज रहा है। वही मौरिस नगर, जहां कभी भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष का बिगुल फूंका गया था। जहां दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ के तत्कालीन अध्यक्ष स्वर्गीय अरुण जेटली के निमंत्रण पर आए लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने सत्ता को सीधी चुनौती दी थी।

तब से यमुना में बहुत पानी बह गया है। तब के युवा वृद्ध हुए। युवाओं की नयी पीढ़ियां आती रहीं। लेकिन मौरिस नगर चौक पर आज भी युवाओं का ही जुटान होता है। यहां अगर कुछ नहीं बदला है तो युवाओं के तेवर, जो आज भी अन्याय, शोषण और भ्रष्टाचार के विरुद्ध तीखे हो उठते हैं। आज एक बार फिर मौरिस नगर चौक पर सजे मंच पर अभाविप से जुड़े छात्र-नेता आज के प्रश्नों पर विचार साझा कर रहे हैं, समाधान सुझा रहे हैं। अनियमितताओं को, विसंगतियों को चुनौती दे रहे हैं।

खुला अधिवेशन समाप्त हुआ। अपने निर्धारित वाहनों में बैठ कर सभी प्रतिनिधि अधिवेशन स्थल की ओर बढ़ चले। चेहरों पर थकान नहीं, उल्लास दिखता है। पंक्तियों में लगकर भोजन प्राप्त करना, समूहों में बैठ कर खाना, थाली में अन्न का एक कण भी नहीं छोड़ना है। प्लेटें निश्चित स्थान पर रखनी हैं। समय पर सत्र में पहुंचना है। हर जगह एक अनुशासन है जो धीरे-धीरे जीवन में उतरता जाता है। गढ़ता है कार्यकर्ता के जीवन को, जीवन भर के लिए।

प्रायः एक सामान्य कार्यकर्ता अपने कार्यकाल में तीन-चार राष्ट्रीय अधिवेशनों में सहभागी होता है। कुछ अधिक समय तक कार्य से जुड़े रहते हैं तो अधिवेशनों की संख्या आठ-दस तक पहुंच जाती है। किन्तु हर अधिवेशन से जुड़ी घटनाएं जीवन भर के लिए स्मृतियों का अंग बन जाती हैं, अविस्मरणीय हो जाती हैं। यही स्मृतियां कार्यकर्ताओं को अपने व्यक्तिगत जीवन में जाने के बाद भी संगठन से जोड़े रखती हैं।

यह संगठन द्वारा विकसित कार्यकर्ता विकास की अनूठी प्रक्रिया है जिसमें बिना कोई उपदेश दिए, अपनी व्यवस्था से, अपनी योजना से, वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के आचरण से, कार्यकर्ता सीखता जाता है। अनुशासन में ढलता जाता है, जीवन में आगे बढ़ता जाता है।

गत 75 वर्षों में संगठन की इस प्रक्रिया से गुजर कर लाखों कार्यकर्ता समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचे हैं, जहां वह अपना सर्वश्रेष्ठ दे रहे हैं। अमृतकाल में परिषद देश एवं समाज के प्रति अपने इस विनम्र योगदान के लिए संतोष तथा गौरव का अनुभव करती है, विश्वास दिलाती है कि देश सुरक्षित हाथों में है।

संपादक
आशुतोष भटनागर

संपादक-मण्डल
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह
उत्कर्ष श्रीवास्तव

वन्देमातरम के नाद से गूंज उठा दिल्ली विश्वविद्यालय

'विविध भाषा-विविध वेश, फिर भी अपना एक देश' 'दिल्ली हो या गुवाहाटी, अपना देश-अपनी माटी'

संजय दीक्षित

दिल्ली, 9 दिसंबर। दिल्ली स्थित बुराड़ी क्षेत्र से दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर जाने वाले मार्ग पर हजारों की संख्या में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के कार्यकर्ताओं का समूह गुजर रहा है। देश के हर राज्य से आए अभाविप कार्यकर्ता अपने-अपने राज्य की वेशभूषा में जब समवेत रूप से अभाविप का जयघोष कर रहे थे, तो सारा वातावरण गुंजायमान होने लगा। अवसर था बुराड़ी के डीडीए मैदान में आयोजित अभाविप के 69वें अधिवेशन के अवसर पर निकाली गई शोभायात्रा का।

शाम लगभग चार बजे शुरू हुई शोभायात्रा में अभाविप के लगभग दस हजार कार्यकर्ता पूरे जोश में थे। कोई लाल पगड़ी बांधे था, तो कोई गुलाबी पगड़ी में, कोई पीली पगड़ी बांध कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा था तो कोई राजस्थानी पगड़ी में था। अपने-अपने राज्य की परम्परागत वेशभूषा में छात्राएं और छात्र शोभायात्रा में थे। कश्मीर से कन्याकुमारी, गुजरात से लेकर अरुणाचल प्रदेश, हर प्रदेश का प्रतिनिधित्व यह बता रहा था कि अभाविप को विश्व का सबसे बड़ा संगठन कहना गलत नहीं है।

शोभायात्रा मार्ग में अभाविप के 44 प्रांतों की टोली एक के बाद एक करके निकल रही थी। 'भारत माता की जय' 'विद्यार्थी परिषद जिंदाबाद' के साथ ही 'जय-जय श्रीराम' का घोष हर तरफ सुनाई दे रहा था। कार्यकर्ताओं के हाथों में तख्तियां 'छात्र शक्ति-राष्ट्र शक्ति' को दर्शाने के साथ ही अभाविप की बढ़ती शक्ति के साथ 'स्वाभिमान से ओत-प्रोत, यह भारत की तरुणाई है' का सन्देश सभी

(शेष पृष्ठ 2 पर)

बदल रही है भारत की वैश्विक भूमिका : मुकुंद सीआर

दिल्ली, 9 दिसंबर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के अमृत महोत्सवी वर्ष में आयोजित 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत एवं उसकी भूमिका' विषय पर अपने विचार रखते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह मुकुंद सीआर ने कहा कि वर्तमान में दो मुद्दों पर भारत को देखने की आवश्यकता है। इनमें पहला है- हमारा दुनिया के सामने परिदृश्य और दूसरा है विश्व के समक्ष हमारी भूमिका। उन्होंने कहा कि एक देश को अर्थव्यवस्था की दृष्टि से समृद्ध किया जा सकता है, लेकिन इसकी सांस्कृतिक पहचान, उसकी भूमिका के लिए बहुत महत्व रखती है।

भारत के परिदृश्य पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आज विश्व का परिदृश्य भारत के बारे में क्या है? इस पर विचार किया जाए तो विश्व बहुध्रुवीय दिखाई देता है। एक समय था जब अमेरिका और रूस के मध्य सत्ता की लड़ाई चलती थी, लेकिन सोवियत यूनियन जब ख़त्म हुआ, तो उसके बाद अमेरिका शक्तिशाली बना। लेकिन तब चीन भी शक्तिशाली बना। लेकिन अब अमेरिका पहले जितना शक्तिशाली नहीं रहा, सोवियत यूनियन जैसा रूस भी नहीं है और विश्व अब शायद असंतुलित भी नहीं रहा। अब दुनिया बहुध्रुवीय है और इस वातावरण के अग्र नामों में भारत का नाम है।

भारत की भूमिका के विषय में उन्होंने कहा कि भारत की अर्थशक्ति, सैन्यशक्ति और कूटनीतिक शक्ति बढ़ी है, लेकिन भारतीय समाज में ऊंच-नीच आज भी है। आज भी कुछ स्थानों पर पानी पीने के लिए कुआं अलग है, समाजों के मंदिर अलग है, अंतिम क्रिया के लिए श्मशान अलग है। ऐसे में ध्यान आता है कि केवल विकास से देश ठीक नहीं होगा। अगर विश्व में हमारा स्थान ठीक बनाना है तो समाज में बहुत अंदर तक के सुधार आवश्यक हैं और इसके लिए बहुत काम बाकी है। इस विषय में युवाओं को ध्यान दिलाते हुए उन्होंने कहा दुनिया डिजिटल परिवर्तन के साथ ऊर्जा परिवर्तन की ओर बढ़ रही है। अक्षय ऊर्जा (रिन्यूएबल एनर्जी) परिवर्तन, हरित ऊर्जा (ग्रीन एनर्जी) परिवर्तन के साथ साथ यह भी ध्यान में रखना होगा कि विवैश्वीकरण (डीग्लोब्लाइजेशन) का परिवर्तन भी हमारी प्रभावी भूमिका के लिए बाधा बन सकता है। ध्यान दिया जाए तो उत्पादों की आपूर्ति के लिए पूरे विश्व की चेन चीन के पास है और दुनिया उस चेन को थोड़ा-थोड़ा प्रयास करके तोड़ने का काम कर रही है।

उन्होंने कहा कि हमें अपनी शक्ति बढ़ानी पड़ेगी और इसके लिए जनसांख्यिकी (डेमोग्राफिक) परिवर्तन को भी स्वीकार करना पड़ेगा। जनसांख्यिकी (डेमोग्राफिक) परिवर्तन दुनिया में है और उसका असर कई देशों में देखा जा सकता है। परंतु भारत चारों बदलावों में डिजिटल बदलाव, अक्षय ऊर्जा (रिन्यूएबल एनर्जी) एवं हरित ऊर्जा (ग्रीन एनर्जी) बदलाव, विवैश्वीकरण (डीग्लोब्लाइजेशन) का बदलाव और जनसांख्यिकी (डेमोग्राफिक) बदलाव की दृष्टि से सही दिशा में जा रहा है। इन चुनौतियों से हम बाहर आए हैं, परंतु धार्मिक (रिलीजियस) बदलाव की समस्या भारत में है, जो हम स्वीकार करते हैं, लेकिन उसमें भी हमें सुखद परिणाम मिलेगा। उन्होंने कहा कि आज भारत के युवा राष्ट्र निर्माण में स्वावलंबन जैसे कई कार्यों से अपना मन-धन दोनों लगा रहे हैं।

वैश्विक परिदृश्य को अभाविप प्रतिनिधियों के समक्ष रखते हुए उन्होंने कहा कि दुनिया में आज चार एफ (F) का संकट है- Food, Fuel, Fertilizers, Fineness यह हम सभी को ध्यान में आता है। खाद्यान संकट रूस और यूक्रेन युद्ध के दौरान कई देशों में खड़ा हुआ। आज दुनिया के 80 देशों में उर्वरक की वजह से संकट है। कई देश ईंधन के मूल्य से अपनी विदेश नीतियां बना रहे हैं, कई देशों में ईंधन के दाम भी बढ़ रहे हैं। विश्व के प्रमुख देश रूस और अमेरिका के बड़े-बड़े बैंक संकट में हैं तो वित्तीय संकट भी दुनिया में ध्यान में आता है। परंतु इन चार संकट से भारत कैसे बच गया तो पता चलता है कि इसके पीछे हमारी जनशक्ति है जो प्राकृतिक खेती, इलेक्ट्रिक व्हीकल जैसे कई बदलावों से अपना दृष्टिकोण बदल रही है, परन्तु हमें और भी काम करने की आवश्यकता है।

उन्होंने भारत की भूमिका में सामाजिक संदेश को जोड़ते हुए अमेरिका के वोकिजम का उदाहरण देते हुए कहा कि जो शक्ति व्यवस्थाओं से नहीं जुड़ पाती, वह शक्ति व्यर्थ के काम में भी लग सकती है। भारत की समाज शक्ति ही भारत के विकास कल्याण के लिए जब चिंतन करेगी तो भारत की भूमिका ज्यादा मजबूत बनेगी। भारत में स्वाभाविक युवा शक्ति ज्यादा है। यह चित्र 2025 तक देखने को मिलेगा, लेकिन उनके पास काम और उनकी बुद्धि में दृष्टि भी बहुत जरूरी है। उस युवा शक्ति को शारीरिक और मानसिक दृष्टि से सशक्त होना पड़ेगा। एशियाई खेलों में हमारे युवा खिलाड़ी मेडल जीतते हैं। उनकी शारीरिक दृष्टि देश का मान बढ़ाती है, परन्तु युवाओं को बुद्धि और मन से भी सशक्त होना पड़ेगा। स्मरण किया जाए तो दो हजार वर्ष के आक्रमण काल में हमारी गति धीमी हुई। पर आज भारत दुनिया में जा रहा है और हमें जाना भी चाहिए। यह भी ध्यान रखना होगा कि हमारा चरित्र और व्यवहार उस देश के लोगों का दिल जीतने वाला होना चाहिए। दुनिया के अलग-अलग देशों में हमारे देश के लोगों का प्रभाव बन रहा है उसके पीछे का कारण क्या है? उनका व्यवहार, उनका चरित्र, भारतीय आचरण का अनुसरण कर रहा है, वह चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो या अर्थ क्षेत्र हो या शिक्षा क्षेत्र हो।

उन्होंने भारतीय मूल्यों की महत्ता का उल्लेख करते हुए कहा कि सनातन मूल्यों की स्थापना अगर करनी है तो युवाओं की एक विशेष भूमिका इसमें बन जाती है। ऐसे में ध्यान आता है कि आज की मूलभूत आवश्यकताएं क्या है? वह आवश्यकताएं बदली हैं और उसके अनुसार हमारी दृष्टि भी बदलनी चाहिए। युवा खाली कागज़ है। उनके मन में जो लिखेंगे, वह परिदृश्य बनेगा और यह युवा उसी डेमोग्राफिक डिविडेंड की युवा पीढ़ी है जो आज भारत को दुनिया मे विशेष बनाती है। ऐसे युवाओं के बीच हमें भारत की भूमिका रखनी है। राष्ट्र के बारे में सनातन मूल्यों के बारे में हमारी दृष्टि क्या है? यह युवाओं को समझाना पड़ेगा। आज भारत की स्थिति दुनिया देख रही है। युवा पीढ़ी अगर संकल्प कर लेगी तो यह रिलीजियस परिवर्तन का संकल्प भी शुरू हो जाएगा। उसमें अगर कोई महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है तो वह छात्र है और इसकी प्रमुख जिम्मेदारी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की बनती है।

वन्देमातरम के नाद से गूंज उठा ...

को सुना रही थीं। डीडीए मैदान में अभाविप अधिवेशन के लिए बनाए गए इंद्रप्रस्थ नगर से आरम्भ हुई रैली का नेतृत्व अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही एवं महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल के साथ अन्य पदाधिकारियों ने किया। स्थानीय नागरिक अभाविप के 44 प्रांतों का प्रतिनिधित्व शोभयात्रा में देख रहे थे।

उत्तर-पूर्व के राज्य त्रिपुरा, नागालैंड, असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, सिक्किम राज्य के अभाविप कार्यकर्ता अपनी परंपरागत वेशभूषा में थे, जोकि समवेत स्वर में 'भारत माता की जय' के उद्घोष के साथ बढ़ते जा रहे थे, वहीं कश्मीर से आई छात्राएं हिजाब में थीं और उन्हें भी 'भारत माता की जय' का उद्घोष करने में कोई समस्या नहीं थी। दक्षिणी राज्यों में उत्तर तमिलनाडु, दक्षिणी तमिलनाडु, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश के साथ ही वामपंथी शासन वाले केरल राज्य के कार्यकर्ता भी अपनी-अपनी वेशभूषा में 'भारत माता की जय' 'वन्देमातरम' का उद्घोष करते हुए भारत की एकता को प्रदर्शित करते हुए दिखाई दिए।

शोभायात्रा में शामिल अवध प्रान्त के समूह में 'भगवान श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण' की वेशभूषा में सबसे आगे चल रहे कार्यकर्ता, जहां अयोध्या में भगवान श्रीराम के मंदिर के होने वाले उद्घाटन का संकेत दे रहे थे, वहीं एक छात्रा भारत माता के स्वरूप में शोभा यात्रा में शामिल हुईं।

पंजाब के कार्यकर्ता जोश के साथ 'बोले सो निहाल, सतश्री अकाल' के साथ ही 'एबीवीपी-शेरों की' के नारे लगाते हुए जोश के साथ चल रहे थे। महाराष्ट्र, कोंकण, विदर्भ, देवगिरि प्रान्त के कार्यकर्ता अपनी-अपनी वेशभूषा में थे तो हिंदवी स्वराज यात्रा के रथ पर विराजमान छत्रपति शिवाजी महाराज सभी कार्यकर्ताओं में ऊर्जा का संचार कर रहे थे। इनमें से कई कार्यकर्ता शिवाजी महाराज के सैनिकों के वेश में शामिल हुए।

छत्तीसगढ़, झारखण्ड, उड़ीसा के समूह में शामिल कार्यकर्ता जनजातीय गौरव का अहसास कराते हुए दिखाई दिए, तो बिहार, कानपुर, काशी, गौरक्ष प्रान्त, उत्तर एवं दक्षिण बंगाल, उत्तरांचल, महाकौशल, मालवा, मध्य भारत, ब्रज, मेरठ, हिमाचल, हरियाणा प्रान्त के छात्र-छात्राएं पूरे जोश के साथ शोभायात्रा में शामिल हुए।

अनुशासित रूप से शोभायात्रा मार्ग पर चलते हुए हजारों अभाविप कार्यकर्ताओं का स्वागत करने के लिए मार्ग में कई स्थानों पर मंच बनाए गए थे, जहां स्थानीय लोगों के साथ ही मुस्लिम जनता एवं बच्चे भी अभाविप कार्यकर्ताओं पर पुष्पवर्षा करते हुए दिखाई दिए। जाति-धर्म का कोई भेदभाव कहीं भी नहीं था ओर सभी लोगों ने ढोल-नगाड़े के साथ अभाविप कार्यकर्ताओं का स्वागत किया। कई स्थानों पर शोभायात्रा के स्वागत में पटाखे भी छुड़ाए जा रहे थे।

'एक भारत-सक्षम भारत' की अवधारणा को साकार करने वाली शोभायात्रा किंग्सवे कैंप, जी.टी.बी नगर, पटेल चौक होते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के नार्थ कैंपस में जब पहुंची तो दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के पदाधिकारियों के साथ ही विश्वविद्यालय के सैकड़ों छात्र शोभायात्रा के स्वागत के लिए उमड़ पड़े। लगभग चार किलोमीटर लम्बी शोभायात्रा नार्थ कैंपस होते हुए मौरिस नगर चौराहे पर पहुंची तो स्थानीय नागरिकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन गई। मौरिस नगर में शोभायात्रा का समापन हुआ। उसके बाद खुले अधिवेशन का आयोजन किया गया। इस दौरान हजारों की संख्या में अभाविप कार्यकर्ताओं के साथ ही दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं का समूह भी उपस्थित था।

पाक अधिक्रांत जम्मू-कश्मीर में भी तिरंगा फहराएगी अभाविप : याज्ञवल्क्य शुक्ल

अवनीश कुमार सिंह

दिल्ली, 9 दिसंबर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) का खुला अधिवेशन आज शाम दिल्ली विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक मौरिस नगर चौक पर संपन्न हुआ। दस हजार से अधिक युवा तरुणाई के बीच दिल्ली विश्वविद्यालय का यह चौराहा पूरी तरह राष्ट्रवाद के रंग में रंगा नजर आया। भारत माता की जय और वंदे मातरम् की जयघोष से पूरा परिसर से गूंज उठा। सड़कों पर लघु भारत का प्रत्यक्ष दर्शन अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन की शोभायात्रा का विशेष आकर्षण रहा।

शोभा यात्रा के बाद हुए खुले अधिवेशन में अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने शिक्षा, समाज और युवाओं की भूमिका पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि आज दिल्लीवासियों द्वारा इस देश के विभिन्न प्रांतों से आई युवा तरुणाई का जिस तरह से भव्य स्वागत किया, उससे अभिभूत हूं। शैक्षणिक परिसरों से निकलकर विद्यार्थी आम जनमानस के मध्य अपनी आवाज लेकर जाते हैं और समाज को जागृत करने का प्रयत्न करते हैं। यह भव्य शोभायात्रा राष्ट्र की अखंडता का शक्तिशाली प्रदर्शन है और विखंडनकारी षड्यंत्रों पर कड़ा आघात है।

उन्होंने कहा कि कश्मीर के लाल चौक पर तिरंगा फहराने का सपना अभाविप ने पूरा किया। अब बारी पाकिस्तान अधिक्रांत जम्मू-कश्मीर की है। पाक अधिक्रांत जम्मू-कश्मीर में तिरंगा लहराने से हम कुछ कदम दूर हैं ओर अभाविप इस सपने को भी साकार करेगी। उन्होंने कहा कि अभाविप का कोई आंदोलन क्षणिक नहीं होता, जब तक सभी युवाओं का हित पूरा नहीं होता, तब तक अभाविप छात्रहितों के लिए लड़ती रहती है।

खुले अधिवेशन में ओडिशा के कालाहांडी से आए विभाग संगठन मंत्री (कालाहांडी) बुधदेव बाघ ने कहा कि हिंदी भाषा को लेकर दुर्भावना की राजनीति जो लोग देश में करते आ रहे हैं, उन्हें समझना होगा कि हिंदी पूरे भारत को जोड़े रखने का काम करती है। हिंदी हम सबकी मातृभाषा भले न हो, लेकिन हिंदी हम सबकी मां की भाषा है। इसलिए भारत के विकास के लिए राजनीति होनी चाहिए, नकि भारत के विभाजन के लिए।

खुले अधिवेशन को संबोधित करते हुए असम के प्रान्त मंत्री सीमान्ता कुमार ने कहा कि पूर्वोत्तर की कला, संस्कृति और विचारों को शेष भारत के लोगों से जोड़ने का अत्यंत महत्वपूर्ण काम अभाविप ने किया है। इसका परिणाम यह है कि पूर्वोत्तर का युवा आज भारत की विकास यात्रा में बढ़-चढ़कर सहभागिता कर रहा है। पूर्वोत्तर का जो विकास हो रहा है, उसके लिए हमारा युवा केंद्र की मोदी सरकार को धन्यवाद देता है।

खुले अधिवेशन में अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री हुश्यार सिंह मीणा ने कहा कि देशभर के विश्वविद्यालयों में फैले राष्ट्रविरोधी वामपंथियों को जड़ से उखाड़ने का काम अभाविप करती आई है और आगे भी करेगी। वामपंथियों की देशविरोधी गतिविधियों को अभाविप कभी सफल नहीं होने देगी।

अधिवेशन में मेरठ प्रांत मंत्री क्षमा शर्मा ने कहा कि आज दुनिया के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी पुरूषों के बराबर है। अभाविप ने हमेशा नारी शक्ति के संघर्ष का साथ दिया है। हम भारत की महिलाओं के योगदान पर गौरवान्वित महसूस करते हैं। आज भारत के शीर्ष पद का नेतृत्व भी एक महिला राष्ट्रपति कर रही है। केरल से आए केंद्रीय कार्यसमिति के सदस्य श्रवण ने कहा कि छात्र हितों को लेकर अभाविप कभी किसी से समझौता नहीं करती है, बल्कि युवाओं के लिए हमेशा दो कदम आगे जाकर लड़ने वाला संगठन अभाविप है। हिमाचल की शिल्पा कुमारी ने अपने संबोधन में पर्यावरण संरक्षण के प्रति युवाओं को जागरूक रहने की अपील की। खुले अधिवेशन को दिल्ली प्रान्त मंत्री हर्ष अत्री ने भी सम्बोधित किया। दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ अध्यक्ष तुषार डेढ़ा ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

कार्यकर्ताओं की दृष्टि में राष्ट्रीय अधिवेशन

व्यशाक, केरल

यह मेरा पहला राष्ट्रीय अधिवेशन है जिसमे मुझे आने का सौभाग्य मिला। यहां आकर मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा है और मैं यहां आने से पहले बहुत उत्साहित था। अधिवेशन में आकर मेरा जोश दोगुना हो गया है और मैंने यहां पर बहुत कुछ सीखा भी है। उम्मीद है कि भविष्य में भी अभाविप के अधिवेशन में हिस्सा लेने का अवसर मिलेगा।

प्रदीप, बिहार

हम अपने जीवन में भारत के हर कोने में नही जा सकते। लेकिन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन के माध्यम से भारत के हर हिस्से से आए लोगों से मिलकर और उनकी भावनाओं को जानकर पूरे भारत में घूमने का अनुभव किया। साथ ही छात्र एकता को आगे ले जाने का जोश महसूस हुआ।

योगेश, सिक्किम

यह मेरे जीवन का सबसे अच्छा अनुभव है। मैंने यहां लघु भारत के रूप में छात्र एकता का अनुभव किया। अधिवेशन में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के कार्यकर्ताओं के साथ ही अन्य राज्यों की संस्कृति को जाना और भारत की एकता का गर्व महसूस किया।

शिव कुमार तिवारी, प्रयागराज

अधिवेशन में मुझे सबसे ज्यादा पानी को बचाने के लिये उसका महत्त्व समझ मे आया और पूरे अधिवेशन में पॉलीथिन कहीं नही दिखी। पर्यावरण का पूरा ध्यान दिया गया। सभी कार्यकर्ताओं में सामूहिकता दिखी। पूरे देश से आए कार्यकर्ताओ का आपस मे स्नेह प्रेम से रहना एवं अपने अपने राज्य की संस्कृति का परिचय देना बहुत अच्छा लगा तथा टेंट सिटी में रहना बहुत अच्छा लगा। यहां पर साफ सफाई का विशेष ध्यान दिया गया है।

प्रिंस चौबे, मध्य भारत

यहां आकर हमने लघु भारत के रूप में विभिन्नता में एकता की शक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव किया। साथ ही आने वाली पीढ़ी के व्यक्तित्व निर्माण की ओर जाने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के आग्रह को समझा। मेरे लिए यह ऐसा अनुभव है, जो हमेशा याद रहेगा।

पवन सीताराम, हरियाणा

अभाविप के 69वें अधिवेशन में आकर मैंने एक भारत-श्रेष्ठ भारत का अनुभव किया। पिछले तीन दिन में हमें यहां पर छात्र एकता का अनुभव हुआ। अन्य राज्यों के लोगों से मिलकर उन्हें जाना, उनकी संस्कृति को समझा। कई कार्यकर्ताओं से मित्रता भी हुई। यह मेरे लिए अविस्मरणीय अनुभव है, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

वंशिका कुंभकार, उज्जैन

69वां राष्ट्रीय अधिवेशन का हमारा अनुभव बहुत अच्छा रहा, यहां हमें अलग-अलग प्रांत की वेशभूषा तथा उनकी संस्कृति देखने को मिली और सभी से हमारा संपर्क भी हुआ। उन सभी से हमें बात करके यह ज्ञात हुआ कि वह अपने-अपने कैंपस में किस तरीके से अभाविप के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं।

डॉ. भाष्कर मिश्रा, दिल्ली

अद्भुत छात्र-छात्राओं का संगम और उत्साह यह दर्शाता है कि भारतबोध और भारतीयता का भाव गहरा हुआ है। अधिवेशन स्थल पर परिषद के सह संस्थापक दत्ता जी डिंडोलकर की स्मृति में लगी प्रदर्शनी सभी कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणास्पद है। प्रदर्शनी देखकर भारत के समृद्ध इतिहास को सहजता से समझा जा सकता है।

प्रस्तुति : अनुराग पुण्डीर

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार

सम्मान समारोह का आयोजन आज

दिल्ली, 8 दिसंबर। शिक्षा, समाज, पर्यावरण, विज्ञान जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले युवाओं को प्रदान किए जाने वाले 'प्राध्यापक यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार-2023 का वितरण रविवार को किया जाएगा। अबकी बार पुरस्कार के लिए बिहार के शरद विवेक सागर, मध्य प्रदेश की लहरीबाई पडिया तथा राजस्थान के वैभव भंडारी को चुना गया है। पुरस्कार के रूप में एक लाख रुपए की धनराशि के साथ ही प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किया जाएगा।

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार-2023 की चयन समिति ने 2023 के लिए कम आय एवं वंचित वर्ग के भारतीय युवाओं को वैश्विक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए शरद विवेक सागर (बिहार), श्रीअन्न (मिलेट्स) के संरक्षण एवं संवर्धन के मौलिक कार्य के लिए सुश्री लहरीबाई पडिया (डिंडोरी, मध्य प्रदेश) तथा दिव्यांगों के जीवनस्तर को बेहतर और आत्मविश्वास युक्त बनाने के लिए डा. वैभव भंडारी (पाली, राजस्थान) को चयनित किया है। अभाविप की संगठनात्मक यात्रा के 'अमृत महोत्सव वर्ष' को व्यापक तथा अविस्मरणीय बनाने के लिए चयन समिति ने इस बार तीन युवाओं को पुरस्कार देने का निर्णय लिया।

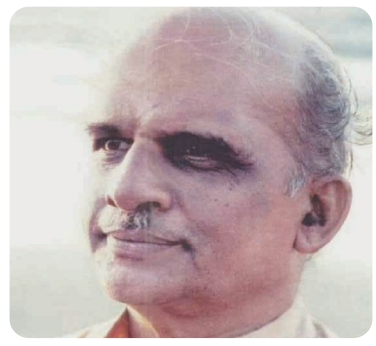

सामान्य रूप से यह पुरस्कार प्रत्येक वर्ष किसी एक युवा को दिया जाता है।

प्रा. यशवंतराव केलकर की स्मृति में यह पुरस्कार देने की शुरूआत 1991 से हुई थी। प्रा. केलकर को अभाविप का शिल्पकार कहा जाता है। अभाविप के संगठनात्मक विस्तार, सुदृढ़ीकरण के साथ ही वैचारिक अधिष्ठान, कार्यकर्ता विकास तथा कार्यपद्धति को स्थापित एवं निर्धारित करने में प्रा. केलकर की उल्लेखनीय भूमिका रही है। यह पुरस्कार अभाविप एवं विद्यार्थी निधि न्यास की एक संयुक्त पहल है, जो छात्रों की उन्नति एवं शिक्षा के क्षेत्र में काम करने के लिए प्रतिबद्ध है। पुरस्कार का उद्देश्य युवा सामाजिक परिवर्तनकारियों के कार्य को सामने लाना, उन्हें प्रोत्साहित करना और ऐसे सामाजिक उद्यमियों के प्रति युवाओं का आभार व्यक्त करते हुए उन्हें सेवा कार्य के लिए प्रेरित करना है।

विद्यार्थी निधि न्यास छात्रों के सर्वांगीण विकास तथा कल्याण, भारतीय जीवनपद्धति, विचार में श्रद्धा बढ़ाने और राष्ट्रीय चारित्र्य निर्माण की दिशा में कार्यरत है। अपने आदर्श एवं लक्ष्यप्राप्ति के लिए कार्यरत व्यक्ति तथा संगठनों को हर प्रकार की सहायता निधि न्यास करता है। इसी दृष्टि से व्यक्तित्त्व शिविर, ग्रामीण एवं वनवासी क्षेत्र में श्रमानुभव शिविर, स्वामी विवेकानंद जयंती आदि अनेक कार्यक्रमों को आर्थिक सहायता तथा संयुक्त आयोजन भी विद्यार्थी निधि न्यास द्वारा किया जाता है।

शरद विवेक सागर

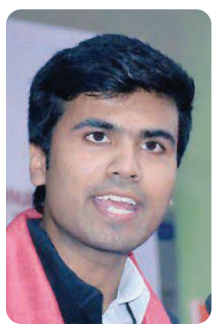

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार-2023 के लिए चयनित शरद विवेक सागर मूलतः बिहार के एक छोटे से गांव जीरादेई के निवासी हैं। बाल्यावस्था में ही वह श्री रामकृष्ण-विवेकानंद की शिक्षाओं से परिचित हुए। युवाओं की शिक्षा संबंधी विभिन्न समस्याओं का निवारण करते हुए शैक्षिक अवसरों और प्रशिक्षण के माध्यम से युवा पीढ़ी को सशक्त बनाने के उद्देश्य से शरद ने 2008 में 'डेक्सटेरिटी ग्लोबल' नामक मंच की स्थापना की। 'डेक्सटेरिटी ग्लोबल' मंच ने सुदूर भारतीय कस्बों और गांवों के सत्तर लाख से अधिक युवा नागरिकों को शैक्षिक अवसरों से जोड़ा है। 'डेक्सटेरिटी ग्लोबल' के पूर्व छात्रों ने एक हजार से अधिक प्रमुख राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में जीत हासिल की तथा विश्व के शीर्ष पांच सौ विश्वविद्यालयों से 175 करोड़ रुपए से अधिक की छात्रवृत्ति हासिल की है। इनमें से 80 प्रतिशत से अधिक छात्र लघु आय एवं वंचित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'डेक्सटेरिटी ग्लोबल' से जुड़े अनेक छात्र वैश्विक-शैक्षणिक मंचों पर भारत की शान बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

सुश्री लहरीबाई पडिया

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार-2023 के लिए चयनित मध्यप्रदेश के डिंडोरी जिले की निवासी सुश्री लहरीबाई पडिया को अपनी दादी तथा मां से मोटे अनाज की पौष्टिकता तथा महत्व पता चला, जिससे वह बीजों के संरक्षण के लिए प्रेरित हुईं। वह श्रीअन्न (मिलेट्स) प्रजातियों के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं और उनके पास 150 दुर्लभ किस्म के पौष्टिक मोटे अनाज के बीजों का बैंक है । उन्हें 'मिलेट्स एंबेसडर' बनाया गया है। बैगा जनजाति से संबंध रखने वाली लहरीबाई ने पूरे देश को अच्छे स्वास्थ्य, प्रकृति संरक्षण, खान-पान का जो संदेश दिया है, वह आज की आवश्कता अनुरूप अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है। श्रीअन्न का स्वाद तथा पौष्टिकता आने वाली पीढ़ियों को मिले, इसलिए लहरी बाई सतत सक्रिय हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी उनके योगदान की प्रशंसा कर चुके हैं। इसी वर्ष राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने राजधानी दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में लहरीबाई को वर्ष 2021-22 का 'पादप जीनोम संरक्षक किसान सम्मान' प्रदान किया था। लहरीबाई 'मिलेट्स क्वीन' के नाम से प्रसिद्ध हैं और पारंपरिक खेती के उत्थान की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।

डा. वैभव भंडारी

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार-2023 के लिए चयनित डा. वैभव भंडारी मूलतः पाली राजस्थान के रहने वाले हैं। वह दिव्यांगों के जीवनस्तर को बेहतर बनाने के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। उनकी शिक्षा विधि विषय में पीएचडी तक हुई है। बचपन में ही वैभव भंडारी को मांसपेशीय दुर्विकास (मस्कुलर डिस्ट्राफी) के कारण जीवन-परिवर्तनकारी समस्याओं का सामना करना पड़ा, लेकिन वैभव इस चुनौती के सामने झुके नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करने के लिए अटूट दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया। वैभव के कार्यों ने समाज के विभिन्न पहलुओं में ऐसे परिवर्तन किया जिससे दिव्यांगों के लिए रास्ते आसान हो सकें। वैभव भंडारी सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी रहे हैं। 2007 में राजस्थान सरकार के वन और पर्यावरण मंत्रालय ने उनके उत्कृष्ट पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों को मान्यता दी। वैभव भंडारी को दिव्यांगों के समर्थन में अनुकरणीय कार्य के लिए राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। समर्पण, दृढ़ता और सकारात्मक प्रभाव डालने का जुनून वैभव भंडारी की उल्लेखनीय यात्रा को परिभाषित करता है।

Prof. Yashvantrao Kelkar YUVA PURASKAR AWARDEES

YEAR	TYPE OF WORK	AWARD WINNER
1991	A Woman Social Worker	Smt. Indumati Rao (Karnataka)
1992	Appropriate Technology for Rural Development	Shri Santosh Gondhalekar (Maharashtra)
1993	Development of Tribal People	Smt. Ubati Riang (Asom)
1994	Preservation and Promotion of Traditional Technology	Shri Sudharam Birjia Shri Rambriksha Lohra (Bihar)
1995	Preservation and Promotion of Traditional Technology	Shri Ramdas Palekar (Maharashtre)
1996	Slum Dwellers, Development	Shri Vishvanath Bendre (Maharashtra)
1997	Social Awareness Through Journalism	Shri Samipkumar Das (Asom)
1998	Protection and Promotion of Urban Environment	Shri Anil Mehta (Rajasthan)
1999	Development of Sanskrit	Shri P. Nandakumar (Kerala)
2000	Cow : Protection, Conservation & Research	Dr. Ramakant Bhosle (Vidarbh)
2001	Promotion and Popularisation of Bharatiya Folk Music	Smt. Lakshmikumari (Bihar)
2002	Commercial Application of non-Conventional Energy	Dr. Priyadarshini Karve (Maharashtre)
2003	Service to Lepers and their Children	Shri Aashis Gautam (Uttaranchal)
2004	Development of Tribals through Training In Bamboo-item Production and their Marketing	Smt. Nirupama Deshpamde Shri Sunil Deshpande (Vidarbh)
2005	Organic Farming Promotion and Rural Development.	Shri A. S. Anand Shri Arunakumar VK (Karnataka)
2006	Work done for Rehabilitation and socialisation of Commercial Sexually Exploited Women and their Children	Shri Girish Kulkarni (Maharashtra)
2007	Achievements for self Reliance In the area of Navigation for Defence Applications.	Shri G. Satheesh Reddy (Andhra Pradesh)
2008	'Poverty Alleviation, Ultimate Care and Protection of the Women, Children and Weaker Section of the Society.'	Sushree Oinam Indira Devi
2009	Employment generation and Rural Development	Dr. Nandita Pathak (Madhya Bharat)
2010	Free IIT coaching to poor and backward students	Shri Anand Kumar (Bihar)
2011	Rehabilitation of orphan and destitute children by uniqely owning their Motherhood"	Smt. Manan Chaturvedi (Rajasthan)
2012	Sustainable Rural Development through People's Movement	Dr. Prasad Deodhar (Maharashtra)
2013	Helping the helpless, homeless, sick, mentally Ill and destitute by providing healthy food, care and opportunity to rehabilitate to restore human dignity	Shri Narayanan Krishnan (Tamil Nadu)
2014	In Appreciation for the history creation by conquering the highest peak In the world with artificial leg & willpower to fight against all odds & dedicated social work	Sushree Arunima Sinha (Ambedkarnagar, UP)
2015	Outstanding work In the sphere of plastic and solid waste management which Immensely contributed to the upliftment of the masses connected with the sanitation, rag-picking and janitorial sector.	Shri Imtiaz Ali (Bhopal, Madhya Pradesh)
2016	In Appreciation of Remarkable work done ' Fighting Against Drug-Addiction among Youth & HIV/AIDS Through Regular Exercise & Maintaining Good Moral Character through Spiritual Engagement'	Shri R. K. Vishwajitsingh (Imphal, Manipur)
2017	Child care , Protection and Development	Shri Gopinath R. (Bengluru , Karnataka)
2018	Creating & Successfully Implementing Innovations In education In Government Schools	Shri Sandeep Joshi (Jalore, Rajsthan)
2019	Looking after at-risk orphans above the age of 18 and working to rebuild their self-respect and all-round development	Shri Sagar Reddy (Navi Mumbai, Maharashtra)
2020	Attracting Youth Towards Sustainable Organic and Multi-Pronged Farming and Creating Rural Employment Through Enterprises by Skilling Youth	Shri Manish Kumar (Bihar)
2021	Facilitating education and training of Mentally Divyang people In the field of organic farming and self-sufficient living	Shri Kartikeyan Ganeshan (Tamil Nadu)
2022	Providing Health Services, Education and Rehabilitation to Orphans and Mental Divyang-s	Shri Nandkumar Palve (Maharashtra)

अधिवेशन स्थल

ज्ञान शील एकता
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
अमृत महोत्सव वर्ष
राष्ट्रीय अधिवेशन
7-10 दिसंबर 2023
सेवार्थ विद्यार्थी
सेवा संवाद-युवा पुरस्कार
इंद्रप्रस्थ नगर
डी.डी.ए मैदान, बुराड़ी, दिल्ली

ज्ञान शील एकता
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
अमृत महोत्सव वर्ष
राष्ट्रीय अधिवेशन
7-10 दिसंबर 2023
खेलो भारत

ज्ञान
अखिल भारती
अमृत महोत्सव वर्ष
7-10 दिसंबर 202
शोभा

अखिल भारतीय
परिषद
विकास

ज्ञान शील एकता
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
अमृत महोत्सव वर्ष
राष्ट्रीय अधिवेशन
7-10 दिसंबर 2023
जनजाति विद्यार्थी कार्य

ज्ञान शील एकता
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
अमृत महोत्सव वर्ष
राष्ट्रीय अधिवेशन
7-10 दिसंबर 2023
केन्द्रीय, राज्य विश्वविद्यालय एवं शोध कार्य

ABVP
ज्ञान
अखिल भारती
अमृत महोत्सव वर्ष
7-10 दिसंबर 202
शोभा

...: झलकियां ...

छायाकार : चमन गौतम

भारत की सांस्कृतिक झांकी प्रस्तुत करता इंद्रप्रस्थ नगर

उत्कर्ष श्रीवास्तव

दिल्ली, 9 दिसंबर। इंद्रप्रस्थ नगर में आयोजित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) का 69 वां राष्ट्रीय अधिवेशन अपनी भव्यता और विशालता के कारण देश एवं दुनिया के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। वैसे तो अभाविप का प्रत्येक अधिवेशन अपने आप में अनूठा और विशेष होता है, लेकिन अमृतकाल की स्वर्णिम बेला में ऐतिहासिक रूप से इंद्रप्रस्थ नगर वर्षों बाद एक भव्य और विराट आयोजन का साक्षी बन रहा है। कला, संस्कृति और इतिहास के साथ स्वाधीनता के नायकों का यशोगान करता राष्ट्रीय अधिवेशन देश के प्रत्येक हिस्से से आए युवाओं की प्रेरणा का केंद्र बन रहा है।

लगभग 52 एकड़ के वृहद परिसर में उकेरी गई भारतीय कलाओं का सजीव चित्रण बहु सांस्कृतिक भारतीय संस्कृति को विशिष्ट स्वरूप में प्रदर्शित कर रहा है। देशभर से आए प्रतिनिधियों के मष्तिष्क में निश्चित रूप से इंद्रप्रस्थ में आयोजित अधिवेशन की स्मृति हमेशा रहेगी। राष्ट्रीय अधिवेशन में भारत की शास्त्रीय व लोक कलाओं का सचित्र वर्णन, न केवल ज्ञानवर्धक है, बल्कि सांस्कृतिक जानकारियों से भी परिपूर्ण है।

इंद्रप्रस्थ नगर में सांस्कृतिक प्रतीकों एवं लोक कलाओं को बेहद खूबसूरती व संजीदगी के साथ उकेरा गया है। इसके साथ ही पीढ़ियों से चली आ रही भारतीय लोक-कलाओं के शनैः शनैः बदलते स्वरूप की दर्शनीय चित्रकारी से अधिवेशन स्थल के विशाल परिसर को सजाया गया है। एक ओर जहां मिथिला क्षेत्र की मधुबनी-मैथिली चित्रकला को देखने के बाद अभाविप कार्यकर्ता मिथिलांचल की भावनाओं एवं अनुभूतियों से स्वयं को जोड़ने से नहीं रोक पाते हैं, बस्तर की डोकरा मूर्तिकला एवं मैसूर चित्रकारी के साथ ही भारत

की प्राचीन एवं परंपरागत लोक कलाओं द्वारा चित्रित लोकभावनाओं की अभिव्यक्ति सहज ही आकर्षित करती है। महाराष्ट्र के आदिवासी क्षेत्र की प्रसिद्ध वर्ली चित्रकारी हो या गढ़वाली एवं संभलपुरी चित्रकारी, सभी चित्रण भारतीय संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं।

उत्कृष्ट कला शैली में उकेरी गई देश के विभिन्न राज्यों एवं भू-भागों की जनजातीय चित्रकारी और दीवारों पर प्रदर्शित बनारस के घाटों के संजीदा चित्रण को देखकर आंखें सहज ही ठहर जाती हैं। प्रदर्शनी दीर्घा में प्रवेश करते ही बस्तर कला प्रारूप में नटराज की मूर्ति,

काष्ठ एवं मिट्टी की दर्जनों आकर्षक वस्तुएं, भारतीय विरासत के प्रतीक चिन्हों सहित अनेक सांस्कृतिक परंपराओं की झलक इंद्रप्रस्थ में आयोजित ऐतिहासिक अधिवेशन में देखी जा सकती है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्राणतत्व वीणा, सितार, बांसुरी, तबला, शंख सहित अनेक वाद्ययंत्रों को परिसर में विभिन्न मार्गों पर चित्रित किया गया है। मानवीय भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करती भारत की प्रसिद्ध नाट्य विधाएं -मणिपुरी, ओडिसी, बिहू, कुचीपुड़ी, कथकली, घूमर सहित लोक-नृत्य विधाओं में हरियाणवी लोक नृत्य, नाटी नृत्य को अधिवेशन परिसर में न केवल चित्रित एवं प्रदर्शित किया गया है, बल्कि इनकी विशेषताओं का भी वर्णन रोचक ढंग से देखने को मिलता है।

भारतीय शौर्य और साहस के प्रतीक महाराजा सूरजमल व महाराजा मिहिर भोज के नाम से दो विशाल द्वार बनाए गए हैं। दो विपरीत दिशाओं में स्थित इन प्रवेश द्वारों के अंदर प्रवेश करते ही द्वापर से त्रेता युग तक के अनेक प्रसंग यथा- पांडव द्यूत क्रीड़ा, भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को गीता का उपदेश सहित दीवारों पर अनेक चित्र उकेरे गए हैं। अधिवेशन स्थल के प्रमुख मार्गों पर दोनों ओर प्रदर्शित सूर्य नमस्कार के साथ ही सभी प्रमुख योगासनों के चित्र तथा स्वतंत्रता संग्राम के नायकों का यशोगान करती

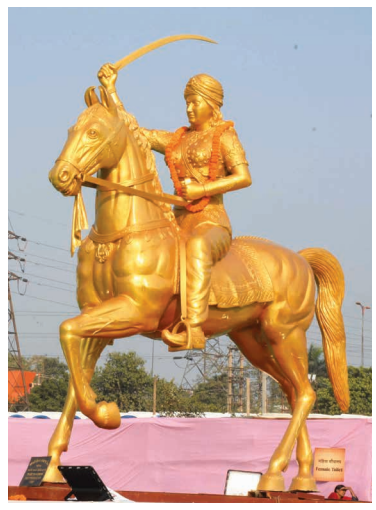

दर्जनों तस्वीरों को परिसर में अलग-अलग स्थानों पर प्रदर्शित किया गया है।

नारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करती सैकड़ों तस्वीरें जिसमें आदर्श नारियों तथा देवियों के नाम पर सीता रसोई, शारदा रसोई, राधा रसोई, अनुसूया रसोई, भाग्यलक्ष्मी रसोई,

अन्नपूर्णा रसोई, कामाख्या रसोई सहित दर्जनों पंडालों का नामकरण किया गया है। भारतीय स्व एवं स्वाभिमान के प्रतीक भगवान श्रीराम मंदिर की प्रतिकृति, मुख्य पंडाल के समीप वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई एवं महाराजा छत्रपति शिवाजी की विशाल मूर्ति अधिवेशन स्थल में मुख्य आकर्षण का केंद्र हैं। दत्ताजी डिडोलकर की स्मृति में आठ विषयों और नौ खण्डों में समायोजित प्रदर्शित की विषयवस्तु अधिवेशन के सहभागियों के लिए स्मृति सहेजने को सहज ही प्रेरित कर रही है। अभाविप का यह अधिवेशन स्थल सभी कार्यकर्ताओं को समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, अनुकरणीय गौरवशाली इतिहास तथा भारतीय संस्कृति के दर्शन पक्ष एवं कला पक्ष की उत्कृष्ट प्रस्तुति कर रहा है।

हिमाचल की टोपी सदरी और मफ़लर ने मोहा मन

अंकुर

दिल्ली, 9 दिसंबर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में हर राज्य की झलक दिखाई दे रही है। अधिवेशन स्थल पर हिमाचल प्रदेश की एक प्रदर्शनी ऐसी लगी है, जो सबका ध्यान आकर्षित कर रही है। हिमाचल से आए कार्यकर्ताओं ने शीत ऋतु के परिधानों की प्रदर्शनी लगाई है, जिसमें सदरी, ऊनी मफलर, टोपी एवं ढाटू शामिल है। यह सभी उत्पाद कुल्लू और रामपुर में बनाए जाने वाले उत्पाद हैं और इन्हें घरेलू ऊन से तैयार किया जाता है। शिमला के रामपुर और कुल्लू के साथ ही किन्नौर, लाहुल–स्पीति ,चंबा जैसे ठन्डे जिलों में भी यह उत्पाद बनाए जाते हैं।

सदरी की बात करें तो यह भेड़ की ऊन से बनाई गई जैकेट (बाजू रहित) है, जिसको पर्वतीय क्षेत्रों में साल भर पहना जाता है। इस ऊनी कपड़े को पट्टू कहा जाता है। इसे ऊन से कपड़ा अर्थात पट्टू बनाने में बहुत मेहनत लगती है। यह देखने में बहुत सुंदर और सालों-साल चलने वाला उत्पाद होता है। यह सफेद,काले और भूरे रंग में ही होता हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में पुरानी से पुरानी सदरी स्थानीय परिवारों के पास मिल जाती है। इसी तरह मफ़लर, जिसे गले में लपेटकर या सिर में बांधकर प्रयोग किया जाता है, सर्दी से बचाता है।

हिमाचल की टोपी की विश्वव्यापी पहचान है, लेकिन अधिवेशन स्थल पर ढाटू भी उपलब्ध है, जिसे महिलाएं ओढ़ती हैं। यह रूमाल आकार का गर्म कपड़ा होता है, जिसे सिर पर बांधा जाता है। महिलाएं दुपट्टे के स्थान पर सिर ढकने के लिए इसका प्रयोग करती हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में विशेष अवसर पर सदरी, ऊनी कोट, टोपी, ढाटू विशेष रूप से पहने जाते हैं और यह सभी के आकर्षण का केंद्र होते हैं। यह वस्त्र शादी-विवाहों में भेंट के रूप में भी दिए जाते हैं। आधुनिकीकरण के कारण यह काम अब मशीनों से भी होने लगा है और एक बड़े बाजार के रूप में उभरा है। अभाविप कार्यकर्ताओं ने अपनी संस्कृति को इस विशाल अधिवेशन में लाकर एक अलग पहचान और छाप छोड़ी है।

कुल्लू निवासी अभाविप कार्यकर्ता प्रियंका ठाकुर कहती हैं कि विभिन्न राज्यों से आए कार्यकर्ता इन्हें खरीदने में काफी रुचि दिखा रहे हैं और इनकी मांग इतनी ज्यादा है कि हमारे पास स्टॉक कम पड़ गया है। वैसे यह सभी उत्पाद अब ऑनलाइन भी उपलब्ध हैं।

अभाविप कार्यकर्ताओं के लिए आकर्षण का केंद्र बना ड्रोन शो

मोहित वर्मा

दिल्ली, 9 दिसंबर। दिल्ली स्थित बुराड़ी के डीडीए मैदान में आयोजित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वे राष्ट्रीय अधिवेशन में शुक्रवार रात्रि में ड्रोन शो का आयोजन किया गया। यह ड्रोन शो जहां अभाविप कार्यकर्ताओं के लिए आकर्षण का केंद्र रहा, वहीं स्थानीय नागरिक भी ड्रोन शो को देखकर अचंभित हो गए।

ड्रोन शो रात लगभग दस बजे प्रारम्भ हुआ। एक के बाद एक करके जब ड्रोन हवा में जाने लगे तो शो देखने वाले कार्यकर्ताओं की आंखों में भी चमक दिखने लगी। ड्रोन के

माध्यम से आसमान में सबसे पहले एबीवीपी लिखा गया। उसके बाद तीन चित्र बनाए गए, जिनमें स्वामी विवेकानंद, अभाविप के पूर्व संगठन मंत्री स्वर्गीय मदन दास देवी ओर अभाविप के पूर्व अध्यक्ष दत्ताजी डिडोलकर के चित्र भी शामिल थे। फिर आसमान में अमृत महोत्सव वर्ष दिखाई दिया। उसके बाद अधिवेशन की 69 संख्या ओर इंद्रप्रस्थ नगर के दृश्य भी सभी को दिखाई दिए। इसके साथ ही ड्रोन के माध्यम से आपका हार्दिक स्वागत भी आसमान में लिखा गया ओर एक कार्यकर्ता को अभाविप के ध्वज के साथ दिखाया गया। छात्र शक्ति का प्रदर्शन नारा लिखने के साथ जब ड्रोन ने भारत माता की जय लिखा तो पूरा अधिवेशन स्थल भी भारत माता की जय के उद्घोष से गूंज उठा। अंत में ड्रोन ने भारत माता की तस्वीर बनाई ओर फिर कमल के फूल का आकार बनाने के साथ ही ड्रोन शो समाप्त हो गया। ड्रोन शो को देखने के लिए अधिवेशन स्थल के बाहर स्थानीय नागरिकों की भीड़ भी जुटी थी।

स्वावलंबन एवं स्वरोज़गार के भाव पैदा कर रहा है सविष्कार

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) का सविष्कार प्रकल्प भारत में युवा उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए अपनी उत्कृष्ट विधाओं से जोड़ने का काम कर रहा है। यह विचार उन आन्दोलनों से आया है, जहां विद्यार्थियों को स्वयं को उद्यम स्तर से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। सविष्कार प्रकल्प के संयोजक कांति सागर मोरे ने राष्ट्रीय छात्रशक्ति से हुई विशेष बातचीत में बताया कि यह प्रकल्प नवाचार, नवाचार केंद्र और विश्वविद्यालय को जोड़कर तकनीक के क्षेत्र वाले युवाओं को आपस में जोड़कर कार्य कर रहा है। इसका उद्देश्य नवाचार के माध्यम से नई-नई चीजों को बनाना है। यह प्रकल्प 2016 में प्रारम्भ हुआ था और अभाविप के 44 प्रांतों में इसके माध्यम से कार्य किया जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर से लेकर राज्य स्तर तक कई कैंपस में काम प्रारम्भ हो चुका है।

वह बताते हैं कि सविष्कार का मूल उद्देश्य यह है कि विद्यार्थियों में स्वावलंबन एवं स्वरोज़गार के भाव को जगाया जाए। उद्यमिता के लिए नवाचार एवं अन्वेषण के माध्यम से नए उद्यम स्टार्टअप स्थापित करना सविष्कार का मुख्य उद्देश्य है। इससे विद्यार्थी समाज में अपनी पहचान बना सकते हैं और स्वयं के लिए अच्छा करने का मौका पा सकते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन के माध्यम से

सविष्कार

सविष्कार प्रकल्प के कार्यों को विद्यार्थियों के सामने रख रहा है। साथ ही सविष्कार प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं को नवाचार क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित कर रहा है।

वह बताते हैं कि भविष्य की नीति का निर्धारण करने के उद्देश्य से सविष्कार हैकाथन का आयोजन भी हर राज्य में कर रहा है। हाल ही में राष्ट्रीय नवाचार सम्मेलन का आयोजन भी किया गया, जिसमें दो सौ से अधिक स्टार्टअप कंपनियों ने हिस्सा लिया। इसके अलावा हर राज्य में स्टार्टअप बैठकों का आयोजन और कैंपस में भी स्टार्टअप बैठकों का आयोजन सविष्कार द्वारा किया जा रहा है। साथ ही जिला स्तर पर भी आयोजन किए जा रहे हैं। हमारा लक्ष्य स्पष्ट है। हम देश में युवाओं के अंदर उद्यमिता की मानसिकता को बढ़ावा देना चाहते हैं, जिससे श्रम को सम्मान मिले और स्वदेशी आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिल सके।

वह बताते हैं कि महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने का काम भी सविष्कार कर रहा है। हमारा मानना है कि निचले स्तर के उद्योगों में सरकार की सहभागिता बढ़नी चाहिए और लघु उद्योग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। जनता को वास्तविक स्थित की जानकारी देने के लिए कार्य किया जा रहा है और प्रान्त स्तर पर कार्यकर्ताओं के लिए कार्यशाला का आयोजन हो रहा है। कैंपस में भी सविष्कार की टीम का गठन करने के प्रयास जारी हैं, जिससे विद्यार्थियों को भी सविष्कार का लाभ मिल सके।

अधिवेशन स्थल : झलकियां ...

अभाविप : छात्र संगठन का दर्शन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने अपना लक्ष्य स्पष्ट करते हुए कहा कि 'राष्ट्रीय पुनर्निर्माण' उसका अंतिम लक्ष्य है। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में 'शैक्षिक परिवार' की अवधारणा के साथ, दलगत राजनीति से ऊपर उठकर, रचनात्मक कार्य के प्रति दृढ़ आस्थावान रहकर शैक्षिक परिसर में एक आदर्श छात्र-आंदोलन खड़ा करने के लिए अभाविप प्रतिबद्ध है। अभाविप का यह लक्ष्य उसने वैचारिक अधिष्ठान की रीढ़ है। छात्र-संगठन के रूप में अभाविप ने जब 'शैक्षिक परिवार' की अवधारणा पर आधारित अपना संगठनात्मक ढांचा खड़ा करने का विचार किया तो यहां अभाविप के नीति-नियंताओं का मंतव्य स्पष्ट किया था कि वह छात्र-संगठन के रूप में कोई 'ट्रेड-यूनियन' नहीं खड़ी कर रहे हैं। उन्होंने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के एक महत्वपूर्ण घटक 'शिक्षा-क्षेत्र' की पुनर्रचना हेतु देश की युवा-शक्ति को गढ़ने का बीड़ा उठाया। अतः उन्होंने कहा कि छात्र, शिक्षक और शिक्षाविद मिलकर एक 'शैक्षिक परिवार' बनाते है। भारतीय संस्कृति में व्याप्त 'परिवार-भाव' से ही उस क्षेत्र की पुनर्रचना संभव है। परिवार के सदस्यों की एकात्मता, परस्परता और भावात्मक नींव पर स्वाधीन भारत की शिक्षा-प्रणाली का भवन खड़ा किया जाना चाहिए। इस प्रकार मूलतः छात्र-संगठन होते हुए भी शिक्षक को संगठन का सहकारी सदस्य बनाया गया तथा कार्य-पद्धति में शिक्षकों की सहभागात्मक भूमिका स्वीकार की गई।

रचनात्मक दृष्टिकोण के आधार पर कार्य करना अभाविप की दूसरी महत्वपूर्ण मान्यता है। इसके अंतर्गत राष्ट्रीय संवेदना एवं दायित्वबोध से परिपूर्ण, प्रत्येक नागरिक की भरपूर हिस्सेदारी के माध्यम से स्वाधीन भारत को पुनः विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित करना, भारतीय संस्कृति का पुनर्जागरण करना, समर्थ एवं वैभव-संपन्न भारत का निर्माण करना संभव होगा। यह प्रयास मूलतः रचनात्मक और निर्माणात्मक ही होगा। अभाविप ने शिक्षा-क्षेत्र में यह जिम्मेदारी स्वीकार की है, अतः हमारा दृष्टिकोण एवं कार्य रचनात्मक चरित्र का होगा।

अभाविप की तीसरी मूलभूत मान्यता दलगत एवं सत्तावादी राजनीति से ऊपर उठकर कार्य करना है। प्रारंभ में परिषद ने अपने लिए 'अराजनीतिक संगठन' शब्दावली स्वीकार की थी, किंतु कालांतर के अनुभवों के आधार पर अधिक स्पष्टता के लिए अन्य शब्दावली चुन ली गई। वर्तमान युग में राजसत्ता अथवा राजनीति, राष्ट्र एवं समाज जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित कर रही है। इस स्थिति में जब अभाविप एक छात्र-संगठन के रूप में छात्रों की नागरिक-भूमिका का विचार करता है, तो यह स्पष्ट है कि छात्र भी सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों के प्रति उदासीन नहीं रह सकता। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का लक्ष्य लेकर राजसत्ता अथवा राजनीति की अनदेखी करना संभव नहीं है। इसलिए अभाविप ने 'अराजनीतिक' शब्द के स्थान पर 'दलगत राजनीति से अलिप्त' रहते हुए सामाजिक दंड-शक्ति के रूप में राष्ट्रीय राजनीति में पूर्ण हस्तक्षेप की नीति को स्वीकार किया। इसीलिए अभाविप ने किसी राजनीतिक दल का अंग बनना स्वीकार नहीं किया। यहां उल्लेखनीय है कि राजनीतिक दलों का मुख्य लक्ष्य सत्ता प्राप्त करना होता है। सत्ता कालक्रमेण भ्रष्ट और निरंकुश होने की प्रवृत्ति रखती है। वर्तमान में राजसत्ता का हस्तक्षेप सभी क्षेत्रों में बढ़ा है और समाज-सत्ता का प्रभाव व्यावहारिक रूप में कम हुआ है, जबकि भारतीय संस्कृति का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि यहां समाज-सत्ता सर्वाधिक प्रभावी भूमिका में रही है।

अभाविप का मानना है कि राजसत्ता की एक नियत सीमा होनी चाहिए और समाज-सत्ता द्वारा वह नियंत्रित होनी चाहिए। राज-सत्ता समाज-सत्ता का एक अंगमात्र है। कोई भी राष्ट्र समृद्धिशाली तभी बन सकता है, जब सभी प्रकार की राजकीय संस्थाएं राष्ट्रत्व की भावना से ओत-प्रोत जागरूक समाज की संगठित शक्ति के नियंत्रण में कार्य करें। अतः दलगत राजनीति की एक सीमित भूमिका है, इस मान्यता के साथ कि संपूर्ण व्यवस्था-परिवर्तन अथवा सामाजिक पुनर्जागरण संपूर्ण समाज के द्वारा होता है और समाज-परिवर्तन का कार्य केवल सरकारों के माध्यम से संभव नहीं हो सकता।

समाज-परिवर्तन, स्वाभाविक एवं जैविक परिवर्तन की प्रक्रिया है। इसे शासन-प्रशासन द्वारा आरोपित नहीं किया जा सकता। व्यक्ति-निर्माण समाज-परिवर्तन का मूल है। वर्तमान युग में राजसत्ता की महत्वपूर्ण भूमिका अवश्य है। इसीलिए अभाविप ने यह स्वीकार किया कि अन्य सामाजिक संगठनों के साथ ही देश की छात्र-शक्ति, राष्ट्र-शक्ति के रूप में संगठित होकर कालक्रमेण भ्रष्ट एवं निरंकुश होने की प्रवृत्ति रखने वाली राजसत्ता पर स्वतंत्र अंकुश का कार्य करेगी। इस प्रकार राजसत्ता पर समाज-सत्ता का नियंत्रण एवं दबाव बना रहेगा, जिससे राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के मार्ग में राजसत्ता बाधक न बन सके। इसलिए अभाविप ने विचारपूर्वक यह तय किया कि वह किसी राजनीतिक दल की शाखा बनने के बदले एक संपूर्ण एवं विशिष्ट छात्र-संगठन के रूप में राष्ट्र-सेवा का कार्य संपन्न करेगी।

अभाविप ने छात्रों की स्वाभाविक विशिष्टताओं की खोज की ओर छात्र-संगठन का एक विशिष्ट दर्शन भी प्रस्तुत किया। उसने छात्रों की ऊर्जा को पहचाना। इस संगठन के नीति-निर्देशकों ने यह अनुभव किया कि आधुनिक भारत में छात्रों-युवाओं को एक नया सामाजिक वर्ग बन रहा है। छात्रों में निहित स्वार्थ के तत्व नहीं होते या बहुत कम होते हैं। वह आत्म-बलिदान की क्षमता से युक्त, ईमानदार एवं ध्येय के प्रति कटिबद्ध रहता है। स्वाभाविक रूप से वह दोषपूर्ण व्यवस्थाओं का निर्मम आलोचक होता है, वैकल्पिक परिवर्तनों के प्रति बाधाओं की परवाह किए बिना सोत्साह सक्रिय हो जाता है और उद्देश्यपूर्ति हेतु सरलता से संगठित भी हो जाता है। अपनी इन विशेषताओं के कारण वर्तमान समय में संस्कारित समाज-सत्ता के रूप में छात्र-समुदाय, दंड-शक्ति बन कर उभर सकता है-ऐसा अनुभव करते हुए अभाविप ने अपना मत प्रतिपादित किया कि छात्र आज का नागरिक है, छात्र-शक्ति राष्ट्र-शक्ति है, वह सत्ता की अनुगामिनी नहीं, बल्कि उसकी नियामक शक्ति है। वह भीड़ का हिस्सा नहीं, समाज का सजग प्रहरी है।

अभाविप के स्थापना-काल से लेकर कई दशकों के उसके अनुभव-चिंतन, अध्ययन-विश्लेषण के पश्चात छात्रों के संदर्भ में उपर्युक्त मत-प्रतिपादन एक खोज थी। इसके पूर्व प्रायः यही कहा जाता था कि छात्र कल का नागरिक है, इस कथन की एक विशिष्ट पार्श्वभूमि थी। भारत की प्राचीन शिक्षा-व्यवस्था गुरूकुल परंपरा पर आधारित थी। इस व्यवस्था के अंतर्गत विद्यार्थी पूरा समय गुरुकुल में रहता था, वही उसका घर होता था। उसकी पढ़ाई की आर्थिक व्यवस्था राज्य अथवा समाज के पास होती थी। विद्यार्थी संपन्न हो, प्रतिष्ठित कुल का हो अथवा सामान्य परिवार का, गुरुकुल में सबको समान माना जाता था। स्वयं के परिवार के धन एवं हर प्रकार की प्रबलता से मुक्त होकर सामान्यजन से जुड़ कर सादा जीवन व्यतीत करते थे। नगरों में भी कुशलता, ज्ञान व विविध कला-शास्त्रों की गुरु की दिव्य परंपरा में रह कर ही पढ़ते थे। संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था ऐसी थी, जिसमें विद्यार्थी समाज द्वारा प्रदत्त एक सुरक्षित वातावरण में अध्ययनरत रहता था। उससे यह अपेक्षा होती थी कि शिक्षा पूरी करने के पश्चात वह अपने नागरिक-जीवन की भूमिका प्रारंभ करेगा। तत्कालीन व्यवस्था की दृष्टि से यह अपेक्षा उपयुक्त ही थी।

भारत की यह प्राचीन व्यवस्था कब और क्यों समाप्त हुई? यह एक अलग अध्ययन का विषय है। किंतु स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात के भारत में शिक्षा-व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन हो चुका था। न तो विद्यार्थी गुरुकुल में पढ़ रहा था और न ही उसे पहले जैसी सुरक्षा प्राप्त थी। वह परिवार में रह कर दिन के मात्र कुछ घंटों के लिए पढ़ने जाता है। पढ़ाई हेतु राज्य अथवा समाज उसकी पूरी व्यवस्था नहीं करता। कई बार जब उसकी पढ़ाई के लिए परिवार भी आर्थिक व्यवस्था नहीं कर पाता, तो उसे स्वयं पढ़ाई के साथ अपने खर्च के लिए कार्य भी करना पड़ता है। अन्य परिजनों की तरह समाज में व्याप्त आर्थिक-सामाजिक विषमता से आज का विद्यार्थी भी प्रभावित होता है। परिवार में रहते हुए वह पारिवारिक एवं सामाजिक कठिनाइयों, दबावों तथा तनावों का सामना भी करता है। इस प्रकार युगानुकूल शिक्षा-व्यवस्था में आए परिवर्तन के कारण विद्यार्थियों, विशेषकर महाविद्यालयीय विद्यार्थियों के लिए विद्याध्ययन उसके जीवन-संघर्ष का प्रथम चरण बन गया।

गुरुकुल-व्यवस्था और आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था में एक और भी महत्वपूर्ण अंतर है-गुरुकुलों में पढ़ने वाले पूर्ण रूप से विद्यार्थी बन कर पढ़ते थे और विद्याध्ययन ही उनकी संपूर्ण गतिविधि होती थी। स्वाधीनता-पूर्व स्थापित औपनिवेशिक व्यवस्था में शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था ऐसी थी कि गिने-चुने लोग ही उच्च शिक्षा पाते थे और समाज में प्रतिष्ठित थे। परिणामस्वरूप स्वाधीन भारत में बड़ी संख्या में विद्यार्थी उच्च शिक्षा की ओर आकर्षित हुए तथा अनेक विश्वविद्यालय एंव अधिसंख्य महाविद्यालय खुले। उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने वालों का उद्देश्य विद्याध्ययन की अपेक्षा डिग्री प्राप्त करना हो गया। स्वाभाविक रूप से विद्यार्थी समुदाय के वर्गीय चरित्र में परिवर्तन हुआ और वह विद्यार्जन करने वालों की अपेक्षा युवाओं का समुदाय अधिक बन गया।

बीसवीं शताब्दी के सातवें दशक के भारत में नई शैक्षिक परिस्थिति के साथ अठारह वर्षीय युवा को व्यस्क मान कर कई कानूनी अधिकार भी दे दिए। उसके बाद देश में 18 वर्ष पर मताधिकार का कानून भी बन गया, अर्थात 18 वर्ष का युवा अपने एवं परिवार के बारे में निर्णय लेने हेतु समर्थ मान लिया गया। मताधिकार से वह जनप्रतिनिधि एवं सरकार चुनने के नागरिक के एक महत्वपूर्ण कर्तव्य के निर्वहन का सक्षम अधिकारी बन गया। विश्वविद्यालयी एवं महाविद्यालयी छात्र की औसत आयु 18 वर्ष है। भारत में हमारे मनीषियों ने यह आयु लगभग सोलह वर्ष तय की थी। भारतीय समाज में प्रचलित लोकोक्ति है-

लालयेत् पञ्चवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे चुत्रं मित्रवदाचरेत।।

अर्थात पुत्र को पांच वर्ष तक लाड़-प्यार करें, दस वर्ष तक अनुशासन की सीख दे और सोलह वर्ष की आयु होने पर उसके साथ मित्र जैसा व्यवहार करे। शरीर विज्ञान के अनुसार 16-17 वर्ष में एक व्यक्ति का शारीरिक विकास लगभग पूर्ण हो जाता है। इस प्रकार 16 वर्ष की अवस्था को किशोरावस्था माना जाता है और यही उम्र विश्वविद्यालयी आथवा महाविद्यालयी शिक्षा में प्रवेश की होती है।

इन विवेचनाओं के आधार पर अभाविप ने यह निष्कर्ष निकाला कि वर्तमान युग में महाविद्यालयी विद्यार्थी अन्य नागरिकों की भांति ही नागरिक-जीवन जीता है। उसमें देश-समाज के सभी विषयों को समझने की योग्यता, उनमें रुचि, तत्संबंधी आवश्यक कदम उठाने का साहस, सक्रिय तथा सक्षम भूमिका निभाने का दायित्वबोध उत्पन्न होता है। इसी परिप्रेक्ष्य को समझते हुए अभाविप ने विद्यार्थी समूह के बारे में युगानुकूल मत-प्रतिपादित किया, 'छात्र कल का ही नहीं, आज का भी नागरिक है। इस प्रतिपादन को एक खोज कहना इसलिए युक्तिसंगत होगा क्योंकि विद्यार्थी एक नागरिक की भूमिका तो पहले से ही निभा रहा था। अभाविप ने मात्र इसे समझा, पहचाना, अभिव्यक्ति दी और छात्र-शक्ति का इस दृष्टि से नियोजन किया। अभाविप ने इस सत्य को स्वीकार कर लिया कि आज के युग का विद्यार्थी देश-समाज के सभी प्रश्नों एवं समस्याओं को हल करने का अधिकारी है।

(पुस्तक 'ध्येय यात्रा' के सम्पादित अंश)

अभाविप के शिल्पकार प्रा. यशवंत राव केलकर

अजीत कुमार सिंह

स्वाधीनता के एक वर्ष बाद 1948 में स्वर्णिम भारत की संकल्पना को केन्द्र में रखकर युवाओं के ऊर्जा का नियोजन कर उसे उचित दिशा देने के उद्देश्य से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) का कार्य प्रारम्भ हुआ। 1948-49 में जो बीज बोया गया था, वह आज विशाल वट वृक्ष का आकार लेकर विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन के रूप में स्थापित हो चुका है। 1948 में राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का ध्येय लेकर परिषद की यात्रा आरंभ हुई, लेकिन अखिल भारतीय स्तर पर स्थापना तब हुई, जब प्रा. यशवंतराव केलकर के रूप में अभाविप को शिल्पकार मिला।

अभाविप को खड़ा करने में अनेकानेक कार्यकर्ताओं का योगदान है, लेकिन प्रा. केलकर का योगदान उल्लेखनीय है। अभाविप को अखिल भारतीय स्तर पर ले जाने की रूपरेखा उन्होंने ही तैयार की। अपने अथक परिश्रम से उन्होंने अभाविप में एक ऐसी कार्यशैली विकसित की, जिसका अनुसरण करते हुए आज अभाविप का कार्य निरंतर प्रगति के पथ पर है। उनके साथ कार्य करने वाले वरिष्ठ कार्यकर्ता कहते हैं कि केलकर जी से जो एक बार मिल लिया, वह सदा के लिए उनका ही हो गया। कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व का सही दिशा में विकास हो, इस दृष्टि से उन्होंने उनकी देखभाल की। हर कार्यकर्ता को काम और हर कार्य के लिए कार्यकर्ता की संकल्पना अभाविप की कार्यपद्धति का आधार है। कार्यकर्ता संभालने के लिए प्रा. केलकर की विशिष्ट पद्धति थी। कार्यकर्ता को एक मनुष्य की तरह समझना, परखना और उसकी क्षमताओं तथा गुणों का विकास करते हुए उसे प्रेरणाओं से भर देना, यह उनकी कार्यकर्ता निर्माण और कार्यकर्ता संभाल की आधारशिला थी। प्रा. केलकर ने कहा था कि हम सब अपूर्णांक हैं और मिलकर पूर्णांक बनते हैं, इस बात पर विश्वास रखना हमारी विशेषता है। हम यह भी मानते हैं कि सभी अपूर्णांक समान महत्व के होते हैं। अधिक महत्वपूर्ण अपूर्णांक और कम महत्वपूर्ण अपूर्णांक ऐसा नहीं होता है।

25 अप्रैल 1925 में महाराष्ट्र के सोलापुर जिले में पंढरपुर नामक कटवे तीर्थ क्षेत्र में जन्म लेने वाले प्रा. यशवंत वासुदेव राव केलकर बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के धनी थे। यहां के विद्यालय, मध्य विद्यालय में उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की। पुणे से स्नातक की शिक्षा लेने के बाद वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बन गए। 1945 से लेकर 1952 तक वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नासिक और सोलापुर जिले में प्रचारक रहे। संघ की योजना के अनुसार 1958-59 में प्रा. केलकर ने अभाविप का दायित्व संभाला। दायित्व मिलने के बाद समग्रता के साथ उन्होंने कार्य प्रारम्भ कर दिया। 1967-68 में वह अभाविप के अखिल भारतीय अध्यक्ष रहे। 1967 में ही अंतरराज्य छात्र जीवन दर्शन (SEIL) की स्थापना हुई, उस समय प्रा. केलकर उसके संस्थापक अध्यक्ष बने। प्रा. केलकर ने अभाविप कार्य को अखिल भारतीय स्तर पर खड़ा करने का विचार किया। विचार-विमर्श के बाद प्रा. केलकर ने स्वयं अभाविप का कार्य शुरू किया। 1981 में स्थापित 'विद्यार्थी निधि' के भी वह संस्थापक अध्यक्ष रहे। प्रा. केलकर का आग्रह प्रथम मनुष्य ढूंढना, कार्यकर्ता तैयार करना एवं प्रत्येक कार्यकर्ताओं के लिए विविध प्रकार के आकर्षक कार्यक्रम ढूंढना उनका मूल कार्य था। उन्होंने सबसे पहले मुंबई पर ध्यान केंद्रित किया। मुंबई में श्री पद्मनाभ आचार्य, बाल आप्टे, मदन दास, वैशंपायन, दिलीप परांजपे आदि छात्र कार्यकर्ता खड़े हुए।

महाराष्ट्र में परिषद कार्य खड़ा हो गया। नागपुर में संघ के प्रभावी प्रचारक दत्ताजी डिडोलकर वापस आए थे। अत्यंत विद्वान युवा प्रिय प्राध्यापक दत्ताजी और प्रा. केलकर जैसे दो समर्थ कंधों पर आगे अभाविप का अखिल भारतीय कार्य खड़ा हुआ। आप्टे जी, मदन जी, राज जी, नारायण भाई, कोहली जी, प्रा. शेषगिरीराव, कृष्ण भट्ट जी समर्थ अभाविप के विकास अध्वर्यु बने। साथ-साथ गोविंदाचार्य, राम बहादुर राय, महेश शर्मा आदि पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं का भी इसमें योगदान रहा। प्रा. केलकर का सर्वस्पर्शी कार्य, सामाजिक समता का अत्यधिक आग्रह रहता था। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के संदर्भ में शिक्षा क्षेत्र में कार्य दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रीय जागरण का कार्य, सामाजिक दंडशक्ति खड़ी करने का प्रयास, रचनात्मक कार्य एवं आवश्यक प्रत्यक्ष आंदोलन आदि अभाविप के आग्रह के विचार रहे।

अभाविप का शायद ही ऐसा कोई कार्यकर्ता होगा जो प्रा. केलकर के नाम से परिचित नहीं होगा। यह प्रा. केलकर के व्यक्तित्व का प्रभाव ही है कि उनके गुजरने के तीन दशक बाद भी कार्यकर्ता उन्हें खुद के बीच पाते हैं। लाखों कार्यकर्ता ऐसे हैं, जिन्होंने प्रा. केलकर के साथ कार्य नहीं किया। लेकिन उनके विचारों का प्रभाव उन पर इतना है कि हमेशा उनके करीब पाते हैं। प्रा. केलकर ने एक दृष्टि से अपना जीवन उद्देश्य अभाविप के सामने रखा था। अत्यंत बुद्धिमान होते हुए भी अभाविप से कार्यमग्नता के कारण उन्होंने पीएचडी नहीं की। 'कार्यमग्नता जीवन हो, मृत्यु यही विश्रांति यह उनके बारे में सच है।' सकारात्मक दृष्टिकोण उनकी विशेषता रही। किसी बात के लिए किसी पर दबाव नहीं रहता था, परंतु उनका छोटी-छोटी बातों का व्यवहार देखकर कोई भी व्यक्ति आदर्श अपेक्षा की कल्पना कर सकता है।

अभाविप और प्रा. केलकर एक-दूसरे के पर्याय हैं। अभाविप में प्रा. केलकर के योगदान पर अगर विचार करें तो पता चलता है कि उनके द्वारा संभाले गए पद जितना महत्व रखते हैं, उससे अधिक महत्व की बात यह है कि उन्होंने अभाविप में कार्यकर्ता-निर्माण, कार्यकर्ता-विकास की प्रक्रिया के साथ ही संगठन की अनूठी कार्य पद्धति स्थिर की। आज अभाविप में जिस कार्य पद्धति की सराहना सभी करते हैं, उस कार्य पद्धति के वह अद्भुत शिल्पकार थे। अपने परिश्रम से उन्होंने अभाविप में एक ऐसी कार्यशैली विकसित की, जिसका अनुसरण करते हुए आज भी अभाविप का कार्य निरंतर प्रगति के पथ पर है। अभाविप के अनेकों कार्यकर्ताओं, विद्यार्थियों के लिए प्रा. केलकर सच्चे मित्र अनुपम तत्व वेत्ता और मार्गदर्शक थे।

विभिन्न प्रतिभाओं एवं क्षमताओं के तरूणों के मन में भारतभूमि और समाज की स्थिति के प्रति सजगता उत्पन्न करते हुए राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य हेतु तैयार करने के लिए प्रा. केलकर जीवन भर कृतसंकल्पित रहे। वह अब इस दुनिया में नहीं है, लेकिन लाखों कार्यकर्ता प्रा. केलकर की कार्यपद्धति एवं कार्यकर्ता निर्माण के सिद्धांतों पर ही चल रहे हैं। उन सिद्धांतों के कारण ही आज अभाविप विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन है।